20 P
201
H 20
MICROFILM

आज़ादीके नुसखे

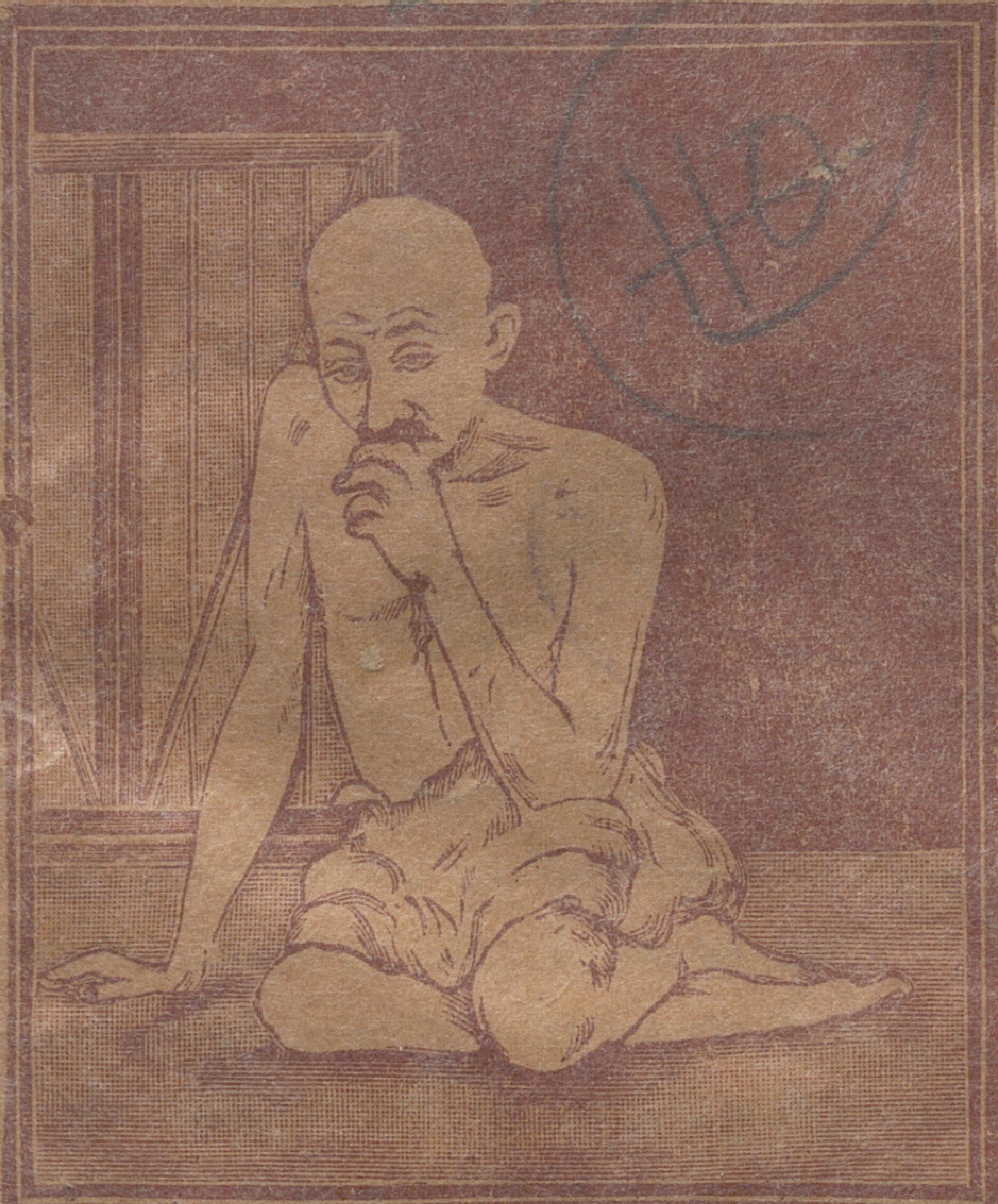

मादरे हिन्द की आंखों का सितारा गान्धी.
चर्खपर कौम के पुरनूर सितारा गान्धी।
जेल खाने में भी जाकर के उठाना मैला.
मुल्क के वास्ते करते हैं गवारा गान्धी।

प्रकाशक तथा संग्रहकर्ता—यमुना सिंह।

राष्ट्रीय साहित्य-सेवासदन।
दिघवारा (सारन) दाम ।)

पुस्तक का सर्वाधिकार तथा जिम्मेवारी प्रकाशक की है।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No
Date
GOVT. OF INDIA

॥ खादी गीत ॥

खादी के धागे धागे में,
अपने पन का अभिमान भरा।
माता का इसमें मान भरा,
अन्यायी का अपमान भरा।
खादी के रेशे रेशे में,
अपने भाई का प्यार भरा।
मां बहिनों का सत्कार भरा,
बच्चों का मधुर दुलार भरा।

खादी की रजत चन्द्रिका ज़ब, आकर तन पर मुस्कराती है।
तब नव जीवन की नई ज्योति, अन्तस्थलमें जग [illegible] ॥
खादी से दीन विपन्नों की, उत्तम उसास निकलती है।
जिससे मानव क्या पत्थर की, भी छाती कड़ी पिघलती है॥
खादी में कितने ही दलितों के, दग्ध हृदय की दाह छिपी।
कितनों की कसक कराह छिपी, कितनोंकी आहत आह छिपी॥
खादीमें कितने ही नंगो, भिखमंगो की है आस छिपी।
कितनों की उसमें भूख छिपी, कितनों की उसमें प्यास छिपी॥

खादी तो कोई लड़ने का हैं, भड़कीला रण गान नहीं।
खादी हैं तीर कमान नहीं, खादी है खंग कृपाण

IMPERIAL RECORD DEP
RECEIVED
30 MAR 1931
110

खादी को देख देख तो भी,
दुश्मन का दल थहराता है।
खादी का झण्डा सत्य शुभ,
अब सभी ओर फहराता है।

खादी का गंगा जब सिरसे'
पैरों तक बह लहराती है।
जीवन के कोने कोने की,
तब सब कालिख धुल जाती है।

खादी का चान्द ताज सा जब,
मस्तक पर चमक दिखाता है।
कितने ही अत्याचार ग्रस्त,
दीनों के त्रास मिटाता है॥

खादी ही भर भर देश प्रेम का,
प्याला मधुर पिलायेगी।
खादी ही दे दे संजीवन,
मूर्दों को पुनः जिलायेगी॥

खादी ही बढ़ चरणों पड़
नूपूर सो लिपट मनायेगा।
खादी ही भारतसे रूठी,
आजापी को घर लायेड़प,

कौल रहे मरदानों का।

निकल पड़ी अब बन कर सैनिक,
भय न करो अब प्राणों का।
बिन स्वराज्य हम नहीं हटेंगे।
कौल रहे मरदानों का॥

अन्धी होकर पुलिस चलावे,
डन्डे कुछ परवाह नहीं।
घर का माल लूट ले जावे,
निकले मुंह से आह नहीं।

जेल यातना हो निर्दय दल,
करें गोलियों की बौछार।
ईश्वर का सुमिरन कर वीरों,
सहते जावो अत्याचार॥
धनी देश हित दास नपुंसक,
लखें दृश्य मरदानों का।
बिन स्वराज्य..............
भगवन भला करे इरवीन का
बने यशस्वी ब्रिटिश निशान।
होय निहत्थों पर मार्शला,
शहरों गांवों के दरम्यान॥

नरनारी बच्चों को गोरे ।
अत्याचारी खूब हने ॥
भारत के कोने कोने में ।
जलियांवाला बाग बने ॥
चिन्ता नहीं बहे लहराता ।
चहुं दिशि खून जवानोंका ॥ विन स्वराज्य हम॥
अटल तुम्हारा धैर्य देख कर ।
गिरिवर भी टल जावेगा ॥
हिंसा रहित हृदय को लखकर ।
सागर शीश झुकावेगा ॥

देख सत्य व्रत तेज तुम्हारा ।
हो जावेगा मन्द प्रताप ॥
सह न सकेगा विधना भी नव ।
शुद्ध शान्तिमय हीय सन्ताप ॥

चकरायेगा सिर दुनियां को ।
राजनति विद्वानों का ॥ विन स्वराज्य ॥

माधव तो कुछ नहीं चाहता ।
सुख स्वराज्य का रत्नागार ॥
केवल हो भारत के घर घर ।
गान्धी का सो सुत अवतार ॥

रहो धर्म पै अड़े करो भय।
नहीं तुच्छ से प्राणों का ॥ विन स्वराज्य ॥

भारत स्वाधीन बनायेंगे—

दमन करो जितना जी चाहे।
हम नहीं शीश उठायेंगे॥
अबतो अड़कर बैठ गये।
भारत स्वाधीन बनायेंगे॥

या स्वतन्त्रता लहरायेगी।
या तो होगा हिन्द मशान॥
तैंतिस कोटि लाश पर शासन।
तब सुखसे करना मतिमान॥

वीर बृटिश अबशान्ति प्रजा की।
खूं के नदी बहा डालो॥
गिरफ्तार करलो गान्धी को।
जीवित उसे जला डालो॥
हम सब मरते नहीं जीव।
फिर नया वस्त्र पहनायेगा॥ अबतो अड़॥
पर ऊपर को रहो देखते।
फट न पड़े आकाश कहीं॥
धस न जाये पृथ्वीमें फट कर।
लण्डन का आवास कहीं॥

ईश्वर को भी दूर हटा कर।
करलो कमलासन अधिकार ॥
रह जावो जगदीश तुम्हीं एक।
रहे और सब तावेदार ॥

देखें तब क्या उत्तर दोगे।
जब यमराज बुलायेंगे ॥ अब तो अड़ कर ॥

शान्त तपस्वियों का यह दल है।
हिंसा नहीं हमारा काम ॥
मरकर ज़ीन्दा करूं विश्व को।
तब तो मेरा माधव नाम।

तुम्हे मारने की इच्छा है।
बनी अभी जर्मन के बाद।
तो क्या चिन्ता कसक मिटालो।
चखो रक्त का मेरे स्वाद ॥

हम स्वतंत्र हो बैठे स्वर्ग में।
सुख की धुनी रमायेंगे ॥ अब तो अड़ कर ॥

हम गांन्धी के अनुयायी हैं।
गान्धी का प्राण हमारा है ॥
तुम क्या समझो उसे विश्व-
भर का मोहन प्यारा है है ॥

यदि गांधी पर हाथ उठा तो,
खूब सोच लो बारम्बार।
रोम २ इस हिन्द देश का,
मरने को होगा तैयार॥

तुम क्या स्वतंत्रता तब ब्रह्मा,
बैठे दे जायेंगे अब तो अड़ कर॥

आज भारती हंकारोंसे लन्दन गी थहराभ।
सारी दुनियां काँप उठेगी,
दोषी दिल हिल जायेगा।
आज भारती हुंकारो से,
लन्दन भी थहरायेगा॥

आज पर्व दिन है स्वराज्य का।
गान्धी युग का मेला है।
उठो भारती जल्द नहालो।
स्वतंत्रता की वेला है।

वीर सपूतो! आओ मिलकर।
आज आत्म बलिदान करें॥
श्राद्ध दिवसमें लोकमान्य का।
इस प्रकार सम्मान करें॥

लहरायेगा हृदय तिरंगा।
झण्डा जब फहरायेगा ॥ आज भारती ॥

आज शान्त काले सागरमें,
उठेगा तूफान महान।
फट जायेंगे गोरे बादल,
चमक उठेगा हिन्दुस्थान।

जननी अङ्कमें एक बार फिर,
देंगे दरस तिलक भगवान।
माता निज आँखों देखेगी,
अपने पुत्रों की बलिदान ॥

आज तपस्या और शक्ति।
दोनोंका भेद दिखायेगा ॥ आज भारती ॥

आज यही प्रण होगा घर घर।
बृद्ध युवा नर नारी का ॥
रहे न तन पर एक सूत।
मैंचीस्टर लंकाशायर का ॥

आज विदेशी भाव विदेशी।
व्यसन बसन बन जायेगा ॥
हिन्द देश से आज विदेशी।
सुत भूत टल जायेगा ॥

खद्दर होगा बसन होगा।
सब्ज़ [illegible] सुहायेगा।

नं० ४

क्या चाहते हैं—

बतायें तुम्हें हम की क्या चाहते है
गुलामी से होना रीहा चाहते हैं॥
फ़क़त इस खता के सज़ा वार हैं हम।
की दर्दे वतन की दवा चाहते हैं॥
बुरा चाहते हैं जो हम बेकसों का।
हम उनका भी दिल से भला चाहते हैं॥
गरीबों का तेरा ही बस आसरा है।
निगाहें करम या खुदा चाहते हैं॥
इस उजड़े हुये गुलसने हिन्द को फिर।
हरा और फूला फला चाहते हैं॥
घड़ा पाप का गालिबन भर चुका है।
ज़माने से जालिम मिटा चाहते हैं॥
वतन पर दिलोजान कुरबाँ को करके।
जो मर कर [illegible] वफा चाहते हैं॥

नं० ५ स्वदेशी।

स्वदेशी प्रेम जनता में अगर एकबार हो याज
हमारा राज्य भारत में विना तलवार हो ज़ाय॥

बसन बनने लगे सुन्दर हमारे हिन्दमें जिस दम
उसो दम मैनचेस्टर का नरम बाजार हो जाय ॥
विदेशी वस्तु लेनेसे जभी इन्कार हम कर दें ।
तभी आधीन यह अपना कड़ी सरकार हो जाय ॥
सुदर्शन चक्र चरखे को अगर सब हाथ में लेलें ।
भयानक तोप भी उससे यहां बेकार हो जाय ॥
स्वदेशी प्रेम मिल गाये अगर भी राग भारत में ।
बगीचा हिन्द का सुखा अभी गुलजार हो जाय ॥
न बेचें जो रुई अपनी कभी हम हाथ गैरों के ।
बनाना वस्त्र का उनको बहुत दुस्वार हो जाय ॥
बचाले द्रव्य जो अपना विदेशों के लुटेरों से ।
अभी निर्धन हमारा देश ये धनवान हो जाय ॥

नं० ७ कट कट के मरना होगा ।

आओ वीरो ! मर्द बनो, अब जेल तुम्हें भरना होगा ।
सत्याग्रह के समर क्षेत्रमें आ आ के डटना होगा ॥
शूर लड़ाके मर्दाने हो, पैर हटाना कभी नहीं ।
मरते मरते माता का अब, कर्ज अदा करना होगा ॥
वक्त नही है ऐ वीरो ! अब गाफिल होकर सोनेका ।
दौड़ चलो मैदानों में, माता का दुःख हरना होगा ॥
याद करो माता का तुमने बहुत-दूध है पान किया ।
दूध पिये को लाज बहादुर, किसी तरह रखना होगा ॥
शेर मर्द हो वीर बांकुड़ा, याद करो कर्त्तव्यों का ।
मातृ वेदी पर हंसते हंसते, कट २ के मरना होगा ॥

नं० ८

जेल की काली कोठरी से—

निर्वासन कालापानी से, जरा न भय मानूंगा मैं।
भूखे विना अन्न पानी रह, गीत बना गाऊंगा मैं॥
शुली पर दे चढ़ा अरे, हंसते हंसते झूलुंगा मैं।
आती सनसन गोली को, छाती से ठुकराऊंगा मैं॥
क्रान्ति विजय 'साम्राज्य नाश' ये शब्द नहीं छोड़ूंगा मैं॥

नं० ९ आजादी के दीवानों दा।

है आज जमाना ऐ वीरो, आज़ादी के दीवानोंका॥
जीवन धन सब कुर्बान करो, है आज समय बलिदानोंका॥
अपना स्वराज्य लेना होगा, इंगलैन्ड आप भग जावेगा।
अपने पैरों पर आप उठो, तुम तजो आस परमानों का॥
हिमालिय से सागर लो, अरु ब्रह्मपुत्र से गुर्जर देश।
अटक कटक लों आदर हो, अब गान्धीके फरमानों का॥
हो तौक गुलामी टुक टुक माता के बन्धन कट जावे।
बलि वेदी पर बलि होवेको, अब चले झुण्ड मरदानोंका॥
चलु देश हिन्द में एक सिरे से, आग लगा दे हे भाई॥
हो देश बीच अब उथल पुथल, अरु खौले खून जवानोंका॥
दास कन्हाई अरु भगतसिंह त्याग का मार्ग बताते हैं।
आन कहीं नहीं जाने पावे, खून न हो अरमानों का॥
फांसी से तुम नहीं डरो परवाह नहीं गोली बरसे।
हो खुली संगीनों पे छाती, कौल रहे मरदानों का॥

टेक — तुम्हारी ही आज पहचान—

धनीजनों सम्पती लगा दो, बली लड़ा दो जान।
विद्वानों तुम बुद्धि लगाकर, रखलो भारत मान ॥ तुम्हारी० ॥
मारग में हो कष्ट उन्हें तुम, सहलो फूल समान।
प्राण जायेतो जाये न जावे, किन्तु हिन्दकी शान ॥ तुम्हारी० ॥
हिन्द तुम्हारा देश हिन्द ही धर्म सुखों की खान।
रहा हिन्दतो जन्म सुफल, नहीं जीवन है पाषाण ॥ तुम्हारी० ॥
माधव तजो हिन्द हित जग, सुख सेज खान औपान।
जबलों हो न स्वतंत्र तुम्हारा, प्यारा हिन्दुस्थान ॥ तुम्हारी० ॥

—·—

नं० ११ उद्बोधन।

किस नीन्द में पड़े हो, भारत के रहने वालों।
उठ कर तैयार हो जा, बिस्तर के सोने वालों ॥
जग के सभी मुसाफिर, कोशों निकल गये हैं।
गफलत में क्यों पड़े हो, सबसे पीछुड़ने वालों ॥
श्रीकृष्ण के बचन को, मन में विचार कर लो।
संग्राम से न डरना गीतों के पढ़ने वालों
सुरधाम प्राप्त होगा, मरने से इस समर में।
जीतोगे तो तुरंत ही, शुभ राज्य पाने वालों ॥
पत्र हो गये हो, अर्जुन का वंश- होकर।
निज आबरू गवां के, कायर कहाने वालों ॥

वन्देमातरम्।

गान्धी महिमा।

गाँधी तू आज हिन्दकी एक शान बन गया।
सारी मनुष्य जातिका अभिमान बन गया।
तू सत्य अहिंसा दया निस्वार्थ त्याग से।
इस आज मृत्युलोक में भगवान बन गया॥
तेरा प्रभाव सादगी हस्तीको देख कर।
दुश्मन भी बेज़बान हो हैरान बन गया॥
तेरी नसीहतों में वो जादूका असर है।
जिसको लगी हवा तेरी वह इन्सान बन गया॥
तू दोस्त है हर क़ौमका हरदिल अज़ीज़ है।
सारा जहान तेरा क़द्रदान बन गया॥
सच तो ये है कि तेरी गई जिस तरफ़ नज़र।
वीरान अगर था तो परस्तान बन गया॥
गो हिन्द आज उठ न सका बाइसे तक़दीर।
फिर भी स्वराज लेनेका सामान बन गया॥
धिक्कार है 'माधो' हमें तैंतिस करोड़ को।
तुझसा फकीर जेलका मेहमान बन गया॥

नं० १२ सत्याग्रही चले है अब।

वीर व्रतधारी सत्याग्रही चले है अव,
आंधी सी मचेगी अन्तरीक्ष व्योम थलमें।
शान्तिमयी क्रान्तियों की लहरें उठेगी उच्च,
होगे हैरान अधिकारी पल पल में।
प्राणों को हथेली पर लेके, वीर बांके जव,
आगे को बढ़ेंगे मुस्कुराते दावानल में।
काया पलटेगी सारी सृष्टि की विचित्र शिघ्र,
मचेगा तहलका अव पशु बल के दलमें।

नं० १३ हमारा कर्तव्य।

आजादी कायुद्ध छिड़ा; निर्भय होकर लड़ना होगा।
राष्ट्र मुक्ती निज आज हमें हंसते हंसते मरना होगा॥
अब भव्य भाव भरने होंगे, भारत के कोने कोने में।
पग पीछे नहीं हटायेंगे दुख सैन्य दलन करना होगा॥
हां रिपु सेना है बहुत बड़ी, इसकी हमको परवाह नहीं।
क्रान्तियां करेंगे शान्तिमयी, हो अन्य हमारी चाह नहीं॥
आवेगी हमें हराने को मैशीनगनें तोपें भारी।
जेलों में भी जाना होगा, पर निकले मुंहसे आह नहीं॥

वन्देमातरम् ।

सुजलां सुफलां मलयज शीतलाम,
शस्यश्यामलां मातरम् । वन्देमातरम् ॥
शुभ्र ज्योत्सना पुलकित यामिनीम् ।
फुल्ल-कुसुमित द्रुमदल शोभिनीम् ॥
सुहासिनीं सुमधुर-भाषिणीम,
सुखदां वरदां मातरम् । वन्देमातरम् ॥
त्रिंशकोटि कण्ठ कल-कल निनाद कराले ।
द्वित्रिंश-कोटि-भुजैधृर्त-खर करवाले ।
के बोले मा, तुमि अबले ? बहुबल धारिणी,
नमामि तारिणीम् रिपुदलवारिणीम् मातरम् । वन्देमातरम् ॥
श्यामलाम्, सरलाम् सुस्मिता,
धरणीं भरणीं मातरम् । वन्देमातरम् ॥

—*—

आवश्यक सूचना ।

एजेण्टों की हर जगह जरूरत है ।

कमीशन काफी दियाजायगा, नीचे लिखे पते से पत्र व्यवहार करें

पता:—

राष्ट्रीय साहित्य सेवा सदन

दिघवारा (सारन)

लक्ष्मीविलास प्रेस, ३ नं० बेहरापट्टी कलकत्ता ।

स्वतंत्रता के सच्चे पुजारी—

शिवाजी महाराज

आज़ाद भारत के गाने शीघ्र प्रकाशित किये जायेंगे।

हरप्रकार की सुन्दर तथा सस्ती छपाई के लिये—
“लक्ष्मीविलास प्रेस” ३ बेहरापट्टी में काम दें।